पाठ – 1
भाववाचक संज्ञा – निर्माण

'क' भाग'	ख' भाग
वह बहुत अच्छा नेता है।	वह बहुत अच्छा **नेतृत्व** करता है।
मैं अपने मित्र के घर गया।	मेरे मित्र ने मेरे साथ **अपनापन** दिखाया।
वह सभा में खामो ा रहा।	सभा में उसकी **खामो ी** सब कुछ कह गयी।
मुझे पढ़ना बहुत अच्छा लगता है।	मैंन **पढ़ाई** पूरी कर ली है।
चलो, काम भीघ्र करो।	उसने काम बड़ी **भीघ्रता** से कर दिया।

उपर्युक्त वाक्यों से पता चलता है कि 'नेता' (जातिवाचक संज्ञा) भाब्द में 'त्व' प्रत्यय लगाने स, 'अपने' (सर्वनाम) भाब्द में 'पन' प्रत्यय लगाने से, 'खामो ा' (वि ोशण) भाब्द में 'ई' 'प्रत्यय लगाने से, 'पढ़ना' (क्रिया) भाब्द में ' आई ' प्रत्यय लगाने से तथा ' ीघ्र' (अव्यय) भाब्द में 'ता' प्रत्यय लगाने से क्रम ाः नेतृत्व', 'अपनापन', 'खामो ी', 'पढ़ाई' तथा 'भीघ्रता' भाववाचक संज्ञा भाब्दो का निर्माण हुआ।

अतः हिंदी में कुछ भाब्द तो मूल रूप से भाववाचक संज्ञा ही होते हैं। जैसे – प्रेम, घृणा, सुख, दुःख,क्रोध, जन्म, मरण, दया, क्षमा, ईर्श्या, भय, सत्य आदि। भाववाचक संज्ञा – निर्माण के कोई वि ोश नियम तो नहीं हैं किन्तु जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, वि ोशण, क्रिया तथा अव्यय भाब्दो में 'त्व', 'पन', 'ई', 'आई', 'ता' आदि प्रत्यय लगाने से तथा कुछ अन्य परिवर्तनों से भाववाचक संज्ञाएँ बनती है।

(क) जातिवाचक संज्ञा भाब्दों से भाववाचक संज्ञा – निर्माण

जातिवाचक संज्ञा भाब्दों में 'आपा', 'इयत', 'ई ', 'ता', 'त्व', 'पन' आदि प्रत्यय लगकर भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण होता है।

इनके कुछ उदाहरण नीचे दिय जा रहे हैं :

जातिवाचक	प्रत्यय	भाववाचक संज्ञा	वि ोश कथन
बूढा	'आपा'	बुढ़ापा	(ऊ को उ हो गया है)
आदमी	'इयत'	आदमियत	(ई को इ हो गया है)
इन्सान	'इयत'	इन्सानियत	

चोर	'ई'	चोरी
ठग	'ई'	ठगी
कारीगर	'ई'	कारीगरी
मनुश्य	'ता'	मनुश्यता
मित्र	'ता'	मित्रता
ि ा ु	'ता'	ि ा ुता
भात्रु	'ता'	भात्रुता
विद्वान	'ता'	विद्वता
प ु	'ता'	प ुता
प्रभु	'ता'	प्रभुता
वीर	'ता'	वीरता
क्षत्रिय	'त्व'	क्षत्रियत्व
नेता	'त्व'	नेतत्व
नारी	'त्व'	नारीत्व
गुरू	'त्व'	गुस्त्व
व्यक्ति	'त्व'	व्यक्त्वि
प्रभु	'त्व'	प्रभुत्व
स्त्री	'त्व'	स्त्रीत्व
हिंदू	'त्व'	हिंदुत्व
बच्चा	'पन'	बचपन
लड़का	'पन'	लड़पन

बाबाबाबगब

कुमार कौमार्य ('य' प्रत्यय लगने पर आदि स्वर वृद्धि अर्थत 'उ' को 'औ' तथा अंतिम स्वन का लोम अर्थात 'र्')

(ख) सर्वनाम भाब्दों से भाववाचक संज्ञा –निर्माण

सर्वनाम भाब्दों में 'कार' 'त्व', 'पन' आदि प्रत्यय लगाकर भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण होता है। इनके कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं :

सर्वनाम	प्रत्यय	भाववाचक संज्ञा
अहं	'कार'	अहंकार
मम	'त्व'	ममत्व, ममता
स्व	'त्व'	स्वत्व
निज	'त्व'	निजत्व, निजता
अपना	'पन'	अपनापन, अपनत्व

(ग) वि ोशण भाब्दों से भाववाचका संज्ञा – निर्माण

वि ोशण भाब्दों में 'आई', 'आपा', 'आहट', 'इमा', 'ई', 'ता', 'पन', 'स्व' तथा 'त्व' प्रत्यय लगाकर भाववाचक भाब्दों का निर्माण होता है।

वि ोशण	प्रत्यय	भाववाचक संज्ञा	
अच्छा	'आई'	अच्छाई	
गहरा	'आई'	गहराई	
भला	'आई'	भलाई	
ऊँचा	'आई'	ऊँचाई	
मोटा	'आपा'	मोटापा	
मीठा	'आस'	मिठास	(ई की इ)
खट्टा	'आस'	खटास	(ट् का लोप)
कड़वा	'आहट'	कड़वाहट	
चिकना	'आहट'	चिकनाहट	
काला	'इमा'	कालिमा	
नीला	'इमा'	नीलिमा	
महा	'इमा'	महिमा	
ईमानदार	'ई'	ईमानदारी	
चालाक	'ई'	चलाकी	
कंजूस	'ई'	कंजूसी	
ग़रीब	'ई'	गरीबी	
आज़ाद	'ई'	आज़ादी	

खामो ा	'ई'	खामो ाी
लाल	'ई'	लाली
सुन्दर	'ता'	सुन्दरता
निर्धन	'ता'	निर्धनता
मूर्ख	'ता'	मूर्खता
सरल	'ता'	सरलता
सज्जन	'ता'	सज्जनता
विद्‌वान	'ता'	विद्‌वता
मधुर	'ता'	मधुरता
चतुर	'ता'	चतुरता
स्वस्थ	'य'	स्वस्थय ('य' प्रत्यय लगने पर आदि स्वर वृद्‌धि अर्थात 'अ' को 'आ' तथा अंतिम स्वर का लोप अर्थात अंतिम वर्ण आधा)
धीर	'य'	धैर्य ('य' प्रत्यय लगने पर आदि स्वर वृद्‌धि अर्थात 'ई' को 'ए' तथा अंतिम स्वर का लोप अर्थात 'र') धीरज, धीरता
उचित	'य'	औचित्य ('य' प्रत्यय लगने पर आदि स्वर वृद्‌धि अर्थात 'उ' को 'औ' तथा अंतिम स्वर का लोप अर्थात 'त')

(घ) क्रिया भाब्दों से भाववाचक संज्ञा –निर्माण

कुछ क्रिया भाब्दों के अंत में लगे 'ना' की जगह 'आई' 'आव', 'आवा', 'आवट' तथा 'आहट' प्रत्यय लगाकर भाववाचक भाब्दों का निर्माण होता है।

क्रिया	प्रत्यय	भाववाचक संज्ञा
लिखना	'आई'	लिखाई
पढ़ना	'आई'	पढ़ाई
उतरना	'आई'	उतराई

घिसना	'आई'	घिसाई
बुनना	'आई'	बुनाई
चढ़ना	'आई'	चढ़ाई
लड़ना	'आई'	लड़ाई
चुनना	'आव'	चुनाव
लगना	'आव'	लगाव
बहना	'आव'	बहाव
बचना	'आव'	बचाव
पहनना	'आवा'	पहनावा
गिरना	'आवट'	गिरावट
थकना	'आवट'	थकावट
सजाना	'आवट'	सजावट
घबराना	'आहट'	घबराहट
मुस्कराना	'आहट'	मुस्कराहट

वि ोश : (1) कुछ क्रिया भाब्दों के अंत में लगे दीर्घ स्वर (आ) की जगह ह्रस्व स्वर (अ) होकर भाववाचक संज्ञा बन जाती है। जैसे –

क्रिया	**भाववाचक संज्ञा**	**क्रिया**	**भाववाचक संज्ञा**
जलना	जलन	पालना	पालन
मिलना	मिलन	उलझना	उलझन

(2) कुछ क्रिया भाब्दों के अंत में लगे 'ना' को हटा देने से ही भाववाचक संज्ञा बन जाती है। जैसे –

क्रिया	**भाववाचक संज्ञा**	**क्रिया**	**भाववाचक संज्ञा**
खेलना	खेल	काटना	काट
भूलना	भूल	खोजना	खोज
माँगना	माँग	नापना	नाप
ढूँढ़ना	ढूँढ़	दौड़ना	दौड़

(3) कुछ क्रिया भाब्दों के अंत में लगे 'ना' के दीर्घ स्वर (आ)को उससे पहले वाले वर्ण साथ लगाकर भाववाचक संज्ञा बन जाती है। जैसे–

क्रिया	**भाववाचक संज्ञा**	**क्रिया**	**भाववाचक संज्ञा**
उड़ना	उड़ान	थकना	थकान

(ड.) अव्यय भाब्दों से भाववाचक संज्ञा निर्माण

कुछ अव्यय भाब्दों के अंत में 'ई', 'ता' और 'कार' प्रत्यय लगाकर भाववाचक भाब्दों का निर्माण होता है।

अव्यय	**प्रत्यय**	**भाववाचक संज्ञा**
दूर	'ई'	दूरी
ऊपर	'ई'	ऊपरी
निकट	'ता'	निकटता
धिक्	'कार'	धिक्कार

वि ोश : कुछ भाब्दों की एक से अधिक भी भाववाचक संज्ञाएं बनती है।

जैसे – मिलना – मिलाम, मिलन
लिखना – लिखावट, लेख, लिखाई
निज – निजत्व, निजता
अपना – अपनापन, अपनत्व

अभ्यास

1. निम्नलिखित भाब्दों की भाववाचक संज्ञा बनाइए :–

भाब्द	भाववाचक संज्ञा	भाब्द	भाववाचक संज्ञा
मित्र		चिकित्सक	
नमक		पराया	
युवक		भक्त	
नारी		ईमानदार	
आलसी		कमाना	
संतुश्ट		पूजना	

राश्ट्रीय	समीप
लिखना	सुन्दर
बच्चा	बंधु
ि क्षक	फिसलना
माता	मुस्कान
हँसना	भाुद्ध
सफेद	मानव
अरूण	तनना
दीन	खोजना

* * *

पाठ – 2

वि ेशण – निर्माण

'

क' भाग	**'ख' भाग**
इस कविता में कल्पना की प्रधानतता है।	यह कविता काल्पनिक है।
आप बहुत अच्छे हो।	आप जैसा अच्छा व्यक्ति कहाँ मिलेगा।
लड़ना अच्छी बात नहीं है।	लड़ाकू को कोई पसन्द नहीं करता।
वह बाहर का है, इसलिए पहचाना गया।	बाहरी व्यक्ति असानी से पहचाना गया।

उपर्युक्त वाक्यों से पता चलता है कि 'कल्पना' (संज्ञा) भाब्द में 'इक' प्रत्यय लगाने से, 'आप' (सर्वनाम) भाब्द में 'जैसा' प्रत्यय लगाने से, 'लड़ना' (क्रिया) भाब्द में 'आकू' प्रत्यय लगाने से तथा 'बाहर' (अव्यय) भाब्द में 'ई' प्रत्यय लगाने से क्रम ाः 'काल्पनिक', 'आप जैसा ', 'लड़ाकू' तथा बाहरी वि ेशण भाब्दों का निर्माण हुआ।

हिंदी में कुछ भाब्द मूल रूप से वि ेशण ही होते हैं। जैसे – अच्छा, बुरा, निपुण, लाल, पीला, वीर, विद्वान, मज़बूत, पुराना, नया , नया पा न नया

नया, कोमल, कठोर आदि। परन्तु कुछ वि ेशणों का निर्माण संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया तथा अव्यय भाब्दों में 'इक', जैसा, आकू, ई आदिा प्रत्यय लगाकर और आव   यक परिवर्तन करके किया जाता है।

(क) संज्ञा भाब्दों से वि ेशण –निर्माण

1 'अक' प्रत्यय लगाकर बनने वाले वि ेशण

संज्ञा	प्रत्यय	वि ेशण
उपदे ा	'अक'	उपदे ाक
उपकार	'अक'	उपकारक
नाम	'अक'	नामक
लेख	'अक'	लेखक

वि ेश – (i) कुछ भाब्दों के अंतिम वर्ण की जगह 'अक' प्रत्यय लगाने से वि ेशण भाब्दों का निर्माण हो जाता है। जैसे–पालन– पालक, पोशण–पोशक, भाासन –   ाासक।

(ii) कुछ संज्ञा भाब्दों के अंत में लगे 'ना' को हटा कर भोश भाब्द के साथ 'अक' प्रत्यय लगाने से वि ोशण भाब्दों का निर्माण हो जाता है। जैसे– गणना – गणक।

(iii) कुछ भाब्दों के अंत में यदि 'आ ' स्वर हो तो 'अक' प्रत्यय लगने पर 'आ' का लोप हो जाता है। जैसे – निन्दा – निन्दक।

(iv) कुछ भाब्दों में 'अक' प्रत्यय लगने पर पहले स्वर में वृद्धि अर्थात् आदि स्वर हो जाती है। जैसे– अव य–आव यक।

'इक' प्रत्यय लगाकर बनने वाले वि ोशण

'इक' प्रत्यय लगने पर आदि स्वर 'अ' को 'आ' हो जाता है जैसे –

वि ोशण	**संज्ञा**	**संज्ञा**	**वि ोशण**
अंग	आगिक	द न	दा ीनिक
अर्थ	आर्थिक	धर्म	धार्मिक
कल्पना	काल्पनिक	प्रकृति	प्राकृतिक
चरित्र	चारित्रिक	संसार	सांसारिक
परिवार	पारिवारिक	समाज	समाजिक
वर्श	वार्शिक	संस्कृत	सांस्कृतिक

'इक' प्रत्यय लगने पर आदि स्वर 'इ', 'ई', 'ए' को 'ऐ' हो जाता है। जैसे –

संज्ञा	वि ोशण	संज्ञा	वि ोशण
इच्छा	ऐच्छिक	दिन	दैनिक
नीति	नैतिक	विज्ञान	वैज्ञानिक
इतिहास	ऐतिहासिक	विवाह	वैवाहिक
सिद्धांत	सैद्धातिक	देह	दैहिक

'इक' प्रत्यय लगने पर आदि स्वर 'उ', 'ऊ', 'ओ' को 'औ' हो जाता है। जैसे –

संज्ञा	वि ोशण	संज्ञा	वि ोशण
उपचार	औपचारिक	भूगोल	भौगोलिक
उद्योग	औद्योगिक	मुख	मौखिक
पुश्टि	पौश्टिक	योग	यौगिक

वि ोश – (i) कुछ ऐसे भी भाब्द हैं जिनका पहला अक्षर दीर्घ ही होता है। उनमें भी 'इक' प्रत्यय लगता है। जैसे – आत्मा– आत्मिक, व्यापार – व्यापारित, राजनीति – राजनीतिक, साहित्य – साहित्यिक।

(ii) अपवाद – कुछ भाब्दों में 'इक' प्रत्यय होने पर पहले स्वर को आदि वृद्धि नहीं होती। जैसे–वर्ण–वर्णिक, क्रम – क्रमिक, श्रम – श्रमिक आदि।

(iii) 'इत' प्रत्यय लगाकर बनने वाले वि ोशण

संज्ञा	**वि ोशण**	**संज्ञा**	**वि ोशण**
अंक	अंकित	चित्र	चित्रित
अंकुर	अंकुरित	प्रस्ताव	प्रस्तावित
अपमान	अपमानित	मोह	मोहित

वि ोश –

(i) कुछ संज्ञा भाब्दों के अंत में 'आ' स्वर लगा होता है, वहाँ 'इत' प्रत्यय लगने पर अंतिम 'आ' स्वर का लोप हो जाता है। जैसे –

संज्ञा	**वि ोशण**	**संज्ञा**	**वि ोशण**
अपेक्षा	अपेक्षित	चिन्ता	चिन्तित
उपेक्षा	उपेक्षित	पीड़ा	पीड़ित
घृणा	घृणित	मूर्च्छा	मूर्च्छित

(ii) कुछ संज्ञा भाब्दों के अंत में 'य' वर्ण होता है, वहाँ 'इत' प्रत्यय लगने पर 'य' का लोप हो जाता है।

जैसे –

संज्ञा	**वि ोशण**	**संज्ञा**	**वि ोशण**
पराजय	पराजित	संचय	संचित
विजय	विजित		

(iv) 'इय' प्रत्यय लगाकर बनने वाले वि ोशण

संस्कृत के तत्सम भाब्दों में ही मुख्यतः 'ईय' प्रत्यय लगता है। जैसे :–

संज्ञा	**वि ोशण**	**संज्ञा**	**वि ोशण**
क्षेत्र	क्षेत्रीय	पुस्तक	पुस्तकीय
द र्न	द र्नीय	भारत	भारतीय
नाटक	नाटकीय	मानव	मानवीय
पर्वत	पर्वतीय	स्थान	स्थानीय

वि ोश – कुछ संज्ञा भाब्दों के अन्त में 'आ' स्वर होता है, वहाँ 'ईय' प्रत्यय लगने पर अंतिम 'आ' का लोप हो जाता है।

जैसे –

संज्ञा	**वि ोशण**	**संज्ञा**	**वि ोशण**
आत्मा	आत्मीय	प्र ंसा	प्र ंसनीय
पूजा	पूजनीय	वन्दना	वन्दनीय

(v) 'य' प्रत्यय लगाकर बनने वाले वि ोशण

'य' प्रत्यय लगने पर संज्ञा भाब्दों के अंतिम स्वर का लोप हो जाता है तथा भोश बचे अंतिम वर्ण का हलन्त हो जाता है।

जैसे –

संज्ञा	**वि ोशण**	**संज्ञा**	**वि ोशण**
क्षमा	क्षम्य	मान	मान्य
पाठ	पाठ्य	वन	वन्य
पूजा	पूज्य	सभा	सभ्य

(vi) 'ई' प्रत्यय लगाकर बनने वाले वि ोशण

संज्ञा	**वि ोशण**	**संज्ञा**	**वि ोशण**
अज्ञान	अज्ञानी	अन्याय	अन्यायी
अनुभव	अनुभवी	प्रेम	प्रेमी
उपयोग	उपयोगी	पि चम	पि चमी
क्रोध	क्रोधी	दुःख	दुःखी
जंगल	जंगली	भाहर	भाहरी

(vii) 'ईला' प्रत्यय लगाकर बनने वाले वि ोशण

संज्ञा	**वि ाशण**	**संज्ञा**	**वि ोशण**
खर्च	खर्चीला	जो ा	जो ीला
चमक	चमकीला	बर्फ	बर्फीला
जहर	जहरीला	रंग	रंगीला

(viii) 'मान' प्रत्यय लगाकर बनने वाले वि ोशण

संज्ञा	वि ाशण	संज्ञा	वि ोशण
बुद्धि	बुद्मान	श्री	श्रीमान

(xi) 'वान' प्रत्यय लगाकर बनने वाले वि ोशण

संज्ञा	वि ोशण	संज्ञा	वि ोशण
गुण	गुणवान	ना ा	ना ावान
धर	धनवान	रूप	रूपवान

(x) 'वी' प्रत्यय लगाकर बनने वाले वि ोशण

संज्ञा	वि ोशण	संज्ञा	वि ोशन
ओजस्	ओजस्वी	तेजस्	तेजस्वी
तपस्	तपस्वी	मनस्	मनस्वी

(xi) ' ाली' प्रत्यय लगाकर बनने वाले वि ोशण

संज्ञा	वि ोशण	संज्ञा	वि ोशन
गौरव	गौरव ाली	बल	बल ाली
प्रतिभा	प्रतिभा ाली	भाग्य	भाग्य ाली

(xii) 'आलु' प्रत्यय लगाकर बनने वाले वि ोशण

संज्ञा	वि ोशण	संज्ञा	वि ोशण
ईर्श्या	ईर्श्यालु	दया	दयालु
कृपा	कृपालु	श्रद्धा	श्रद्धालु

(xiii) 'वती' प्रत्यय लगाकर बनने वाले वि ोशण

संज्ञा	वि ोशण	संज्ञा	वि ोशण
गुण	गुणवती	रूप	रूपवती
पुत्र	पुत्रवती		

(xiv) 'निश्ठ' प्रत्यय लगाकर बनने वाले वि ोशण

संज्ञा	वि ोशण	संज्ञा	वि ोशण
कर्म	कर्मनिश्ठ	धर्म	धर्मनिश्ठ
कर्त्तव्य	कर्त्तव्यनिश्ठ	सत्य	सत्यनिश्ठ

वि ोश :– इन संज्ञा भाब्दों के साथ 'परायण' लगाने से भी वि ोशण भाब्दों का निर्माण होता है। जैसे –

कर्म–परायण, कर्त्तव्य परायण, धर्म परायण, सत्य परायण।

(ख) सर्वनाम भाब्दों से वि ोशण – निर्माण

कुछ सर्वनाम भाब्दों के साथ 'जैसा', 'सा' प्रत्यय लगाने से भी वि ोशण भाब्दों का निर्माण होता है।

सर्वनाम	वि ोशण	सर्वनाम	वि ोशण
आप	आप जैसा	यह	ऐसा
जो	जैसा	तुम	तुम सा
मैं	मेरा –	मुझसा वह	वैसा
तो	तैसा (उस जैसा)	कौन	कैसा

(ग) क्रिया भाब्दों से वि ोशण – निर्माण

कुछ क्रिया भाब्दों के साथ 'आकू', 'आवटी', 'आऊ', 'अक्कड़', प्रत्यय लगाने से भी वि ोशण भाब्दों का निर्माण होता है।

क्रिया	वि ोशण	क्रिया	वि ोशण
पढ़ना	पढ़ाकू	भूलना	भुलक्कड़
बनाना	बनावटी	देखना	दिखावटी
बेचना	बिकाऊ	उड़ना	उड़ाऊ

(घ) अव्यय भाब्दों से वि ोशण निर्माण

कुछ अव्यय भाब्दों के साथ 'ला', 'ई', प्रत्यय लगाने से भी वि ोशण भाब्दों का निर्माण होता है।

अव्यय	वि ोशण	अव्यय	वि ोशण
आगे	अगला	नीचे	निचला
भीतन	भीतरी	ऊपर	ऊपरी
पीछे	पिछला	बाहर	बाहरी

वि ोश : कुछ भाब्दों के एक से अधिक भी वि ोशण बनते है।

जैसे – रंग – रंगीन, रंगीला, रंगदार आदि।
धन – धनी, धनवान, धनवंत, धनाढ्य आदि।
भाग्य – भाग्य ाली, भाग्यवादी, भाग्यवान
नगर – नागर, नागरिक, नगरीय

अभ्यास

1. निम्नलिखित भाब्दों के वि ोशण बनाइए :–

भाब्द	वि ोशण	भाब्द	वि ोशण
सप्ताह	बिकना		
पंजाब	प्रदे ा		
साहित्य	काँटा		
टिकना	राश्ट्र		
निंदा	सेना		
सुख	पराक्रम		
पत्थर	अध्यात्म		
रोग	लालच		
प्रमाण	रंग		
पुस्तक	समान		
बुद्धि	भारीर		
ज्ञान	प्यास		
आधार	कुदरत		
विधान	आदर		
खाना	तैरना		

* * * *

पाठ – 3

संधि

निम्नलिखित भाब्दों को ध्यान से पढ़िए–

(i) सत्य + अर्थ = सत्यार्थ (iii) पर + उपकार= परोपकार

अ + अ = आ अ + उ = ओ

(ii) महा + ई ा = महे ा (iv) सदा + एव = सदैव

आ + ई = ए आ + ए = ऐ

उपर्युक्त पहले उदाहरण में सत्य + अर्थ के मेल से एक नया भाब्द बना – सत्यार्थ। यहाँ 'सत्य' का 'अ' तथा 'अर्थ' का 'अ' का मेल होने से एक नई ध्वनि – 'आ' बनी है।

दूसरे उदाहरण में 'महा' + 'ई ा' के मेला से एक नया भाब्द बना – 'महे ा'। यहाँ 'महा' का 'आ' तथा 'ई ा' का 'ई' का मेल होने से एक नया भाब्द बना – 'परोपकार'।

यहाँ 'पर' का 'अ' तथा 'उपकार' का 'उ' का मेल होने से नई ध्वनि – 'ओ' बनी है।

चौथे उदाहरण में 'सदा' + 'एव' के मेल से एक नया भाब्द बना – सदैव।

यहाँ 'सदा' का 'आ' तथा 'एव' का 'ए' का मेल होने से एक नई ध्वनि – 'ऐ' बनी है।

इस तरह एक भाब्द के अंत की ध्वनि और साथ में मिलने वाले भाब्द की प्रथम ध्वनि में संधि होती है।

अतः जब दो ध्वनियाँ आपस में मिलती है, तब वे एक नया रूप ग्रहण करती है, इस प्रक्रिया का संधि कहते हैं।

संधिविच्छेद

(i) सत्यार्थ = सत्य + अर्थ (iii) परोपकार = पर + उपकार

(ii) महे ा = महा + ई ा (vi) सदैव = सदा + एव

ऊपर के उदाहरणों में दो वर्णों अथवा ध्वनियाँ के मेल से संधि की गयी थी किन्तु इन उदाहरणों में संधि के नियमों को हटाकर वर्णें को फिर पहली अवस्था में लाया गया है।

अतः दो वर्णों अथवा ध्वनियाँ के मेल से जो एक भाब्द बनता है, उसे दुबारा से पहले वाली स्थिति में ले आना संधिविच्छेद कहलाता है।

संधि के भेद

(i) हिम + आलय = हिमालय : इसमें 'हिम' के 'अ' तथा 'अलाय' के 'आ' स्वरों का मेल (अ + आ) हुआ है और एक नई ध्वनि 'आ' बनी है।

अतः स्वरों का स्वरों के साथ मेल होने पर उनमें जो परिवर्तन आता है, उसे स्वर संधि कहते है। यह संधि का पहला भेद है।

(ii) जग्त + नाथ = जगन्नाथ : इसमें दो व्यंजनों (त् + न) की संधि से 'न्न' एक नया रूप बना है।

जगत् + ई ा = जगदी ा : इसमें एक व्यंजन 'त्' तथा एक स्वर 'ई' की संधि से 'दी' नामक एक नया रूप बना है।

अतः विसर्ग का मेल किसी स्वर अथवा व्यंजन के साथ होने पर विसर्ग में जो परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग संधि कहते है। यह संधि का तीसरा भेद है।

वर्णों मे संधि करने पर स्वर, व्यंजन अथवा विसर्ग में बदलाव आ जाता है। अतः संधि तीन प्रकार की होती है–

संधि के भेद

1 स्वर संधि 2 व्यंजन संधि 3 विसर्ग संधि

पाठ्यक्रम में केवल स्वर संधि ही है, अतः यहाँ स्वर संधि की विस्तार से चर्चा की जा रही है।

स्वर संधि

सत्य + आग्रह = सत्यग्रह

अ + आ = आ

उपर्युक्त उदाहरण में 'सत्य' के 'य' में 'अ' स्वर निहिति है और 'आग्रह' के प्रारम्भ में 'आ' स्वर है। इन दोनों स्वरों अर्थात 'अ' स्वर 'अ' और 'आ' को मिलाने से 'दीर्घ आ' हो गया और 'सत्य + आग्रह' में संधि करने पर उसमें परिवर्तन होकर 'सत्याग्रह' भाब्द बना।

अतः स्वर के बाद स्वर के मेल से उनमें जो परिवर्तन होता है, उसे स्वर संधि कहते है।

स्वर संधि के पाँच भेद हैं –

(i) दीर्घ संधि (ii) गुण संधि (iii) वृद्धि (iv) यण् संधि (v) अयादि संधि।

(i) दीर्घ संधि –

(क) उदाहरण : मत + अनुसार = मतानुसार

अ + अ = आ

दीर्घ का अर्थ है – बड़ा। इस संधि में जब दो एक समान वर्ण पास–पास आते हैं, तो दोनों मिलकर उसी वर्ण का दीर्घ रूप बन जाते हैं। इसे दीर्घ संधि कहते हैं।

अन्य उदाहरण –

परम + अणु	= परमाणु	अ + अ	= आ
छात्र + आवास	= छात्रावास	अ + आ	= आ
परीक्षा + अर्थी	= परीक्षार्थी	आ + अ	= आ
चिकित्सा + आलय	= चिकित्सालय	आ + आ	= आ

याद रखने योम्य : पूर्व स्वर = अ या आ

पर स्वर = अ या आ

आदे ा = आ

(ख) उदाहरण – रवि + इन्द्र = रवीन्द्र

इ + इ = ई

अन्य उदाहरण –

अति + इव	= अतीव	इ + इ = ई
प्रति + ईक्षा	= प्रतीक्षा	इ + ई = ई
नारी + इच्छा	= नारीच्छा	ई + इ = ई
रजनी + ई ा	= रजनी ा	ई + ई = ई

याद रखने योग्य : पूर्व स्वर = इ या ई

पर स्वर = इ या ई

आदे ा = ई

(ग) उदाहरण – सु + उक्ति = सूक्ति

उ + उ = ऊ

अन्य उदाहरण

गुरू + उपदे ा= गुरूपदे ा उ + उ = ऊ

सिंधु + ऊर्मि = सिंधूर्मि उ + ऊ = ऊ

वधू + उत्सव= वधूत्सब ऊ + उ = ऊ

सरयू + ऊर्मि = सरयूर्मि ऊ + उ = ऊ

याद रखने योग्य : पूर्व स्वर = उ या ऊ

पर स्वर = उ या ऊ

आदे ा = ऊ

(2) गुण संधि :

(क) उदाहरण – सुर + इन्द्र = सुरेन्द्र

अ + इ = ए

अतः जब अ या आ के बाद 'इ' या 'ई' आ जाए तो दोनों के स्थार पर 'ए' हो जाता है।

अन्य उदाहरण –

वीर + इन्द्र = वीरेन्द्र अ + इ = ए

नर + ई ा = नरे ा अ + ई = ए

यथा + इश्ट = यथेश्ट आ + इ = ए

रमा + ई ा = रमे ा आ + ई = ए

याद रखने योग्य : पूर्व स्वर = अ या आ

पर स्वर = इ या ई

आदे ा = ए

(ख) उदाहरण – वीर + उचिन = वीरोचित

अ + उ = ओ

अत : जब अ या आ के बाद उ या ऊ आ जाए तो दानों के स्थान पर 'ओ' हो जाता है।

अन्य उदाहरण –

सर्व + उदय = सर्वोदय अ + उ = ओ

जल + ऊर्मि = जलार्मि अ + ऊ = ओ

महा + उत्सव = महोत्सव आ + उ = ओ

गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि आ + ऊ = ओ

याद रखने योग्य :

पूर्व स्वर = अ या आ

पर स्वर = उ या ऊ

आदे ा = ओ

(ग) उदाहरण – देव + ऋशि = देवर्शि

अ + ऋ = अर्

अतः जब अ या आ के बाद ऋ आ जाए तो 'अर्' हो जाता है।

अन्य उदाहरण

वसन्त + ऋतु = वसन्तर्तुअ + ऋ = अर्

महा + ऋर्शि = महर्शि आ + ऋ = अर्

याद रखने योग्य : पूर्व स्वर = अ या आ

पर स्वर = ऋ

आदे ा = अर्

(3) वृद्धि संधि

(क) उदाहरण – मत + ऐक्स= मतैक्य

अ + ऐ = ऐ

अ या आ से परे ए या ऐ आ जाएँ तो दोनों को मिला कर 'ए' हो जाता है।

अन्य उदाहरण –

लोक + एशणा= लोकैशणा अ + ए = ऐ

परम + ऐ वर्य = परमै वर्य अ + ऐ = ऐ

तथा + एव = तथैव आ + ए = ऐ

महा + ऐ वर्य = महै र्य आ + ऐ = ऐ

याद रखने योग्य : पूर्व स्वर = अ या आ

पर स्वर = ए या ऐ

आदे ा = ऐ

(ख) उदाहरण – दन्त + ओश्ठ = दन्तौश्ठ

आ + ओ = औ

अतः अ या आ से परे यदि ओ या औ आ जाएँ तो दोनों को मिला कर 'औ' हो जाता है।

अन्य उदाहरण –

अधर + ओश्ठ = अधरोश्ठ अ + ओ = औ

महा + ओज = महौज आ + ओ = औ

परम + औशध = परमौशध अ + औ = औ

महा + औशध = महौशध आ + ओ = औ

याद रखने योग्य : पूवै स्वर = अ या आ

पर स्वर = ओ या औ

आदे ा = औ

(4) यण् संधि

(क) उदाहरण – अति + आचार = अत्याचार

इ + आ = या (इ को य् + आ = या)

अतः इ, ई के बाद कोई भिन्न स्वर होने पर ई / ई की 'य्' हो जाता है और साथ में भिन्न स्वर की मात्रा जुड़ जाती है।

अन्य उदाहरण –

अति + अधिक= अत्यधिक इ + अ = य

अभि + आगत= अभ्यागत इ + आ = या

देवी + अर्पण = देव्यर्पण ई + अ = य

देवी + आगम = देव्यागम ई + आ = या

याद रखने योग्य : पूर्व स्वर = इ या ई

पर स्वर = इ या ई से भिन्न कोई भी स्वर

आदे ा = य् + भिन्न स्वर की मात्रा

(ख) उदाहरण – सु + आगत = स्वागत

उ + आ = वा (उ को व् + आ = वा)

अतः उ, ऊ के बाद कोई भिन्न स्वर होने पर उ/ ऊ को 'व्' हो जाता है और साथ में भिन्न स्वर की मात्रा जुड़ जाती है।

अन्य उदाहरण –

सु + अल्प = स्वल्प उ + अ = व

मधु + आलय = मध्वालय उ + आ = वा

अनु + इति = अन्विति उ + इ = वि

अनु + एशण = अन्वेशण उ + ए = वे

(ग) उदाहरण – पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा

ऋ + आ = रा (ऋ को र् + आ = रा तथा त् + रा = त्रा)

नोट – 'पित्' भाब्द के अंतिम भाग 'त्' में ऋ स्वर के हटने से 'त्' रह गया। यह स्पश्ट ही है कि स्वरहीन व्यंजन को प्रयोग के समय आधा या हलन्त चिह्न लगाकर लिखा जाता है।

अत : ऋ को र् + अ = रा हो गया। अब त् + रा = त्रा हो गया। अत : पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा संधि हुई।

अत : ऋ के बाद भिन्न स्वर होने पर 'ऋ' को 'र' हो जाता हे और साथ में भिन्न स्वर की मात्रा जुड़ जाती है।

अन्य उदाहरण – मातृ + अनुमति = मात्रनुमति ऋ + अ = र

पितृ + अनुमति = पित्रनुमति ऋ + आ = रा

पितृ + उपदे ा = पित्रुपदे ा ऋ + उ = रू

मातृ + ई ा = मात्री ा ऋ + ई = री

याद रखने योग्य : पूर्व स्वर = ऋ

पर स्वर = ऋ से भिन्न स्वर

आदे ा = 'र्' + भिन्न स्वर की मात्रा

(5) अयादि संधि

(क) उदाहरण – ने + अन = नयन

ए + अ = अय (ए को अय् + अ = अय)

'ए' के बाद कोई भिन्न स्वर हो तो 'ए' के स्थान पर 'अय्' हो जाता है।

अन्य उदाहरण –

चे + अन = चयन ए + अ = अय

भो + अन = भायन ए + अ = अय

याद रखने योग्य :

पूर्व स्वर = ए

पर स्वर = ए से भिन्न स्वर

आदे ा = अय् + भिन्न स्वर की मात्रा

(ख) ने + अक = नायक

ऐ + अ = आय (ऐ को आय् + अ = आय)

'ऐ' के बाद कोई भिन्न स्वर हो ता 'ऐ' के स्थान पर 'आय्' हो जाता है।

अन्य उदाहरण – गै + अक = गायक ऐ + अ = आय

गै + अन = गायन

याद रखने योग्य : पूर्व स्वर = ऐ

पर स्वर = ऐ से भिन्न स्वर

आदे ा = आय् + भिन्न स्वर की मात्रा

(ग) उदाहरण – पो + अन = पवन

ओ + अ = अव (ओ को अव् + अ = अब)

ओ के बाद कोई भिन्न स्वर हो तो 'ओ' के स्थान पर 'अव्' हो जाता है।

अन्य उदाहरण –

भो + अन = भवन ओ + अ = अव

हो + अन = हवन ओ + अ = अव

भो + इश्य = भविश्य ओ + इ = अव

याद रखने योग्य

पूर्व स्वर = ओ

पर स्वर = ओ से भिन्न स्वर

आदे ा = अव् + भिन्न स्वर की मात्रा

(घ) उदाहरण – पौ + अन = पावन

औ + अ = आव (औ को आव् + अ = आव)

औ के बाद कोई भिन्न स्वर हो तो 'औ' के स्थान पर 'आव्' हो जाता है।

अन्य उदाहरण – पौ +अक = पावक औ + अ = आव

भौ +उक = भावुक (औ के आव् + उ = आवु)

नौ +इक = नाविक (औ को आव् + इ = आवि)

याद रखने योग्य :

पूर्व स्वर = औ

पर स्वर = औ से भिन्न स्वर

आदे ा = आव् + भिन्न स्वर की मात्रा

अभ्यास

1 निम्नलिखित का संधि विच्छेद :–

2 निम्नलिखित में संधि कीजिए –

संधि	संधि – विच्छेद	संधि – विच्छेद	संधि
चरणामृत		प्रति + एक	
पुस्ताकलय		गज+ आनन	
मुनी ा		भानु + उदय	
लघुत्तर		वन + औशधि	
द ामे ा		यदि + अपि	
यथेश्ट		ि ाश्ट + आचार	
लोकोक्ति		गुरू + आज्ञा	
पर्यावरण		सुर्य + उदय	
उपर्युक्त		अति + अंत	
इत्यादि		मत + एक्य	

पाठ – 4

समास

निम्नलिखित उदाहरणों को देखिए –

राजा का कुमार – राजकुमार

गौ के लिए भााला – गौ ाला

भला है जो मानस – भलामानस

उपर्युक्त पदों ' राजा का कुमार ' को 'राज कुमार ' तथा गौ के लिए भााला ' को 'गौ ाला' 'भला है जो मानस' को 'भलामानस' के रूप में संक्षेम में लिख सकते हैं। इसी संक्षेपीकरण समास कहते है। 'समास' भाब्द संस्कृत की अस् धातु में सम उपर्सग के मेल से बना है। इसका अर्थ है समाहार या मिलाप। अतः समास की परिभाशा इस तरह होगी –

परस्पर सम्बन्ध रखने वाले दो या दो से अधिक भाब्दों के मेल से जव कोई नया सार्थक भाब्द बनता है तो उस मेल को 'समास ' कहते है।

समस्त पद तथा विग्रह

सेनापति	= सेना का पति	युद्धभूमि	= युद्ध के लिए भूमि
(समस्त पद)	(विग्रह)	(समस्त पद)	(विग्रह)

अतः समास करने के उपरान्त जो भाब्द बनता है उसे 'समस्त पद' कहते हैं। इसे 'सामासिक ' या 'समस्त भाब्द' भी कहते हैं।

समस्त पद को इसके भाब्द खण्डों में अलग – अलग करने की विधि को 'विग्रह' कहते हैं।

समास के पद

सेना	पति	युद्ध	भूमि
(पूर्व पद)	(उत्तर पद)	(पूर्व पद)	(उत्तर पद)

अतः समस्त पद के दो पद होते हैं – पूर्व पद और उत्तर पद। समस्त पद के पहले भाब्द को 'पूर्वपद' तथा दूसरे पद को 'उत्तरपद' कहते है। उपर्युक्त पहले उदाहरण में 'सेना' पूर्वपद तथा 'पति' उत्तरपद' है। इसी तरह दूसरे उदाहरण में 'युद्ध' पूर्वपद तथा 'भूमि' 'उत्तरपद' है।

समास के भेद

किसी समस्त पद का अर्थ सपश्ट करने के लिए इसके पद महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

ऐसा करने के लिए समस्त पदों में कभी पूर्व पद तथा कभी उत्तर पद प्रधान होता है। कभी – कभी पूर्वपद तथा उत्तर पद दोनों ही प्रधान होते हैं, तो कभी दोनों को छोउत्रकर कोई अन्य पद प्रधान होता है। पदों की प्रधनता के आधार पर ही समास मे भेद किए जा सकते हैं–

1 अव्ययीभाव समास 2 तत्पुरूश 3 कर्मधारय समास

4 द्वंद्य समास 5 बहुबीहि समास

दसवीं के पाठ्यक्रम में तत्पुरूश एवं कर्मधारय समास भाामिल हैं, इसलिए यहाँ इन पर विचार किया जा रहा है। निम्नलिखित उदाहरण देखिएः–

विग्रह	**समस्तपद**	**विग्रह**	**समस्तपद**
दे ा के लिए भक्ति	दे ाभक्ति	सेना का नायक	सेनानायक
पूर्वपद उत्तर पद		पूर्वपद उत्तर पद	

यहाँ पहले उदाहरण में पूर्व पद (दे ा) गौण है तथा उत्तर पद (भक्ति) प्रधान है। समास बनाते समय पूर्वपद के साथ आने वाले कारक के विभक्ति चिह्न या परसर्ग (के लिए) का लोप हो गया है। दूसरे उदाहरण में पूर्व पद (सेना) गौण है तथा उत्तर पद (नायक) प्रधान है। समास बनाते समय पूर्वपद के साथ आने वाले कारक के विभक्ति चिह्न या परसर्ग (का) का लोप हो गया है।

अतः जिस समास में उत्तर प्रधान होता है, उसे तत्पुरूश समास कहते है। तत्पुरूश समास में समस्त पद बनाते समय पूर्वपद के साथ आने वाले कारक के विभक्ति चिह्न या परसर्ग (का) का लोप हो जाता है।

विभक्ति चिह्न या परसर्ग लोप के आधार पर तत्पुरूश समास के उदाहरण इस प्रकार है–

(i) कर्म तत्पुरूश

विग्रह	**समस्तपद**	**विग्रह**	**समस्तपद**
सुख को प्राप्त	सुख प्राप्त	य ा को प्राप्त	य ा प्राप्त
परलोक को गमन	परलोक गमन	वन को गमन	वन गमन
गगन को चुमने वाला	गगनचुंबी	माखन को चुराने वाला	माखनचोर

इसमें पूर्वपद के साथ आने वाले कर्म कारक के परसर्ग 'को ' का लोप हो जाता है।

(ii) करण तत्पुरूश

विग्रह	समस्तपद	विग्रह	समस्तपद
भााप से ग्रस्त	भाापग्रस्त	तुलसी द्वारा कृत	तुलसीकृत
हस्तलिखित	हस्त से लिखित	रस से भरी	रसभरी
रेखांकित	रेखा से अंकित	अकाल से पीड़ित	अकाल पीड़ित

इसमें पूर्वपद के साथ आने वाले करण कारक के परसर्ग 'से'/द्वारा का लोप हो जाता है।

(iii) सम्प्रदान तत्पुरूश

विग्रह	समस्तपद	विग्रह	समस्तपद
सत्य के लिए आग्रह	सत्याग्रह	धर्म के लिए भााला	धर्म ााला
हवन के लिए सामग्री	हवन सामग्री	राह के लिए खर्च	राहखर्च
		हाथ के लिए कड़ी	हथकड़ी

इसमें पूर्वपद के साथ आने वाले सम्प्रदान कारक के परसर्ग 'के लिए' का लोप हो जाता है।

(iv) अपादान तत्पुरूश

विग्रह	समस्तपद	विग्रह	समस्तपद
मार्ग से भ्रश्ट	मार्गभ्रश्ट	विद्या से विहीन	विद्याविहीन
धर्मपतित	धर्म से पतित	ऋणमुक्त	ऋण से मुक्त
धनहीन	धन से हीन	दे ा निकाला	दे ा से निकाला

इसमें पूर्वपद के साथ आने वाले अपादान कारक के परसर्ग 'से' का लोप हो जाता है।

(v) सम्बन्ध तत्पुरूश

विग्रह	समस्तपद	विग्रह	समस्तपद
गंगा का जल	गंगाजल	दीनों के नाथ	दीनाराथ
दे ा का वासी	दे ावासी	घोड़ो की दौड़	घुड़दौउ़
अमृत की धारा	अमृतधारी	राश्ट्र का पति	राश्ट्रपति

इसमें पूर्वपद के साथ आने वाले सम्बन्ध कारक के परसर्ग 'का, के, की' आदि का लोप है।

(vi) अधिकरण तत्पुरूश

विग्रह	समस्तपद	विग्रह	समस्तपद
वन में वास	वनवास	गृह में प्रवे ा	गृह – प्रवे ा
ध्यान में मग्न	ध्यान मग्न	आप पर बीती	आपबीती
दान में वीर	दानवीर	कार्य में कु ाल	कार्यकु ाल

इसमें पूर्वपद के साथ आने वाले अधिकरण कारक के परसर्ग 'में', 'पर' आदि का लोप हो जाता है।

विग्रह	समस्तपद	विग्रह	समस्तपद
जेब को कतरने	जेबकतरा	भारण को प्राप्त	भारणगत
ग्राम को गत	ग्रामगत	सब को खाने वाला	सर्वभक्षी
रहीम द्वारा कृत	रहीमकृत	भाोक से आकुल	भाोकाकुल
यज्ञ को लिए भााला	यज्ञ ाला	युद्ध के लिए भूमि	युद्धभूमि
धर्म से विमुख	धर्मविमुख	पथ से भ्रश्ट	पथभ्रश्ट
राजा की सभा	राजसभा	भू का दार	भूदान
ग्राम में वास	ग्रामवास	कर्म में वीर	कर्मवीर

इनके अतिरिक्त तत्पुरूश समास के कुछ और रूप भी होते है–

निम्न लिखित उदाहरण देखिए–

(i) मृत्युं जय (मृत्यु को जीतने वाला) – मृत्युंजय (ि ाव)

(ii) वायु में चलने वाला यान – वायुयान

(iii) न संभव – असंभव

उपर्युक्त उदाहरण संस्कृत से हे और इसमें समस्त पद में 'मृत्यु' में दूसरी विभक्ति अर्थात 'को' विभक्ति चिह्न का लोप नहीं हुआ है। अतः यह अलुक (विभक्ति का लोप न होना) तत्पुरूश है। हिंदी में सह उसी (संस्कृत) रूप में ग्रहण किया गया है।

अतः जिस समस्त पद में विभक्ति का लोप होता, उसे अलुक तत्पुरूश कहते है।

अन्य उदाहरण –

भाब्द	**विग्रह**	**वि ोश कथन**
सरस (सरोवर में)	सरसिज	यहाँ समस्त पद में 'सरसि' में सत्तमी विभक्ति अर्थात् 'में' परसर्ग का लोप नहीं हुआ है।
वाचः (वाणी का) पति	वाचस्पति	यहाँ समस्त पद में 'वाक्स्' में ाश्ठी विभक्ति अर्थात् 'का' परसर्ग का लोप नहीं हुआ।
युधि (युद्ध में) स्थिर	युधिश्ठिर	यहाँ समस्त पद में 'युधि' में सप्तमी विभक्ति अर्थात् 'में ' परसर्ग का लोप नहीं हुआ है।
वि वं (वि व को) भर	वि वंभर	यहाँ समस्त पद में 'वि व' में द्वितीया विभक्ति अर्थात 'को ' परसर्ग का लोप नहीं हुआ है।
भरने वाला		

निम्न लिखित उदाहरण देखिए –

(i) वायु में चलने वाला यान – वायुयान

उपर्युक्त उदाहरण में विभक्ति चिह्न के अतिरिक्त दो भाब्दों के माध्य के कुद अन्य पद (में–विभक्ति चिह्न, चलने वाला – अन्य पद) भी लुप्त हो गए है।

अतः जिस तत्पुरूश समास में विभक्ति चिह्न के अतिरिक्त मध्य के कुछ अन्य पद भी लुप्त हो जाते है, उसे मध्यम पद लोपी तत्पुरूश समास कहते है।

अन्य उदाहरण –

भाब्द	**विग्रह**	**वि ोश कथन**
परमवीर को मिलने	परमवीरच्रक	विभक्ति चिह्न(को)के अतिरिक्त दोनों पदों के मध्य संबंध बताने वाले भाब्द 'मिलने वाला' लुप्त है।
बैलों के द्वारा खीचीं जाने वाली गाड़ी	बैलबाड़ी	विभक्ति चिह्न (के द्वारा) के अतिरिक्त दोनों पदों के मध्य संबंध बताने भाब्द ' खींची जाने वाली ' लुप्त है।
माल ढोने वाली गाड़ी	मालगाड़ी	दोनों पदों के मध्य संबंध बताने वाले भाब्द 'ढोने वाली' लुप्त है।

अश्रु लाने वाली गैस	अश्रुगैस	दानों पदों के मध्य संबंध बताने वाले भाब्द 'लाने वाले' लुप्त है।
मधु इकट्ठा करने	मधुमक्खी	दोनों पदों के मध्य संबंध बताने वाले भाब्द 'इकट्ठा करने वाली'
वाली मक्खी		वाली' लुप्त है।

निम्न लिखित उदाहरण देखिए –

(ii) न संभव – असंभव

न चाहा – अनचाहा

उपर्युक्त उदाहरणों को देखने से पता चलता है कि इनमें पूर्वपद निशेधात्मक है।

अतः जिस समास में पूर्व पद निशेधात्मक हो अर्थात् जब 'न' के साथ किसी भाब्द का समस्त होता है, उसे नञ् तत्पुरूश कहते हैं।

इस समास में यदि 'न' के बाद कोई व्यंजन हो तो 'न' का 'अ' तथा यदि कोई स्वर हो तो 'न' का 'अन्' हो जाता है।

जैसे–

भाब्द	विग्रह	वि ोश कथन
अयोग्य	न योग्य	'न' के बाद 'य' व्यंजन होने पर 'न' का 'अ' हो गया है।
अभाव	न भाव	'न' के बाद 'भ' व्यंजन होने पर 'न' का 'अ' हो गया है।
अन वर	नन वर	'न' के बाद 'न' व्यंजन होने पर 'न' का 'अ' हो गया है।
अनी वर	नई वर	'न' के बाद 'ई' व्यंजन होने पर 'न' का 'अन्' हो गया है।
अनुदार	न उदार	'न' के बाद 'उ' व्यंजन होने पर 'न' का 'अन्' हो गया है।
अनिश्ट	न इश्ट	'न' के बाद 'इ' व्यंजन होने पर 'न' का 'अन्' हो गया है।
अनाचार	न आचार	'न' के बाद 'आ' व्यंजन होने पर 'न' का 'अन्' हो गया है।
अकर्मण्य	न कर्मण्य	'न' के बाद 'क' व्यंजन होने पर 'न' का 'अ' हो गया है।

अपवाद – उपर्युक्त नियम प्रायः संस्कृत के भाब्दों में लागू होता है। हिन्दी के भाब्दों में निशेधात्मक बनाते समय वहाँ भाब्द के भ्रुरू में 'अन' जोड़ दिया जाता है।

भाब्द	विग्रह	वि ोश कथन
अनदेखी	न देखी	यहाँ 'न' के बाद 'द' व्यंजन है पर 'न' का 'अन' हुआ है।
अनहोनी	न होनी	यहाँ 'न' के बाद 'ह' व्यंजन है पर 'न' का 'अन' हुआ है।
अनबन	न बनना	यहाँ 'न' के बाद 'ब' व्यंजन है, पर न का 'अन' हुआ है।

कर्मधारय समास

विग्रह	**समस्तपद**	**विग्रह**	**समस्तपद**
काली है जो मिर्च	काली मिर्च	चरण रूपी कमल	चरणकमल
	पूर्वपद उत्तर पद		पूर्वपद उत्तर पद

यहाँ पहले उदाहरण में पुर्वपद 'काली ' (वि ोशण) है जो कि उत्तर पद 'मिर्च' (वि ोश्य) की वि ोशता बता रहा है। यही समास में पूर्वपद तथा उत्तर पद् में वि ोशण– वि ोश्य सम्बन्ध है तथा तत्पुरूश समास का भेद होने के कारण इसमें उत्तर पद प्रधान है।

यहाँ दूसरे उदाहरण में पूर्वपद 'चरण' (उपमेय) है जिसकी समानता उत्तर पद 'कमल' (उपमान) के साथ की गई है। यहाँ समास में पूर्वपद तथा उत्तर पद् में उपमेय – उपमान सम्बन्ध है।

अतः जिस समास में पूर्वपद तथा उत्तर पद् में वि ोशण – वि ोश्य अथवा उपमेय – उपमार का सम्बन्ध हो, वह कर्मधारय समास कहलाता है।

वि ोश 1 :वि ोशण– जिस भाब्द से संज्ञा या सर्वनाम की वि ोशता प्रकट हो उसे वि ोशण कहते है।

जैसे – 'नील कमल' इस भाब्द में 'नील' भाब्द वि ोशण है जो 'कमल' (संज्ञा) की वि ोशता बता रहा है।

2 वि ोश्य – जिसकी वि ोशता बताई जाए, उसे वि ोश्य कहते हैं। जैसे 'नील कमल' भाब्द मे 'कमल' की वि ोशता बताई जा रही है। अतः 'कमल' यहाँ वि ोश्य है।

3 उपमान – वह वस्तु या व्यक्ति जिससे समता की जाती है, उसे 'उपमान' कहते हैं।

जैसे – 'कमल मुख' में 'कमल' से समता की जा रही है, अतः 'कमल' उपमान है।

4 उपमेय – वह वस्तु या व्यक्ति जिसकी समता की जाए, उसे 'उपमेय' कहते हैं। जैसे – 'कमल मुख' में 'मुख' की समता कमल से की गई है। अतः 'मुख' उपमेय है।

वि ोशण – वि ोश्य संबंध को समझने के लिए कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं–

विग्रह	समस्तपद	वि ोश कथन
महान है जो देव	महादेव	महान (वि ोशण) देव (वि ोश्य)
नीली है जो गाय	नीलगाय	नील (वि ोशण) गाय (वि ोश्य)
परम है जो आनंद	परमानंद	परम (वि ोशण) आनंद (वि ोश्य)

वि ोश : समस्त पद में प्रायः वि ोशण पहले तथा वि ोश्य बाद में लिखा जाता है, किन्तु कई बार वि ोश्य पहले तथा वि ोशण बाद में भी प्रयुक्त होता है। जैसे –

विग्रह	**समस्तपद**	**वि ोश कथन**
गुरू (श्रेश्ठ) है जो वर	गुरूवर	गुरू (वि ोश्य) वर (वि ोशण)
सर्व (सब) में से है जो उत्तम	सर्वोत्तम	सर्व (वि ोश्य) उत्तम (वि ोशण)

उपमान – उपमेय संबंध को समझने के लिए कुछ उदाहरण नीचे दिये गये हैं –

विग्रह भाब्द	**समस्तपद**	**वि ोश कथन**
घन के समान भयाम	घन याम	घन (उपमान) भयाम (उपमेय)
कनक के समान लता	कनकलता	कनक (उपमान) लता (उपमेय)
चन्द्र के समान मुख	चन्द्रमुख	चन्द्र (उपमान) मुख (उपमेय)

उपमेय – उपमान संबंध को समझने के लिए कुछ उदाहरण नीचे दिये गये हैं–

विग्रह भाब्द	**समस्तपद**	**वि ोश कथन**
नर है जो सिंह के समान	नर सिंह	नर (उपमेय) सिंह (उपमान)
मुख है जो चन्द्र के समान	मुख चन्द्र	मुख (उपमेय) चन्द्र (उपमान)
ग्रन्थ है जो रत्न के समान	ग्रन्थरत्न	ग्रन्थ (उपमेय) रत्न (उपमान)

अभ्यास

निम्नलिखित का समास –विग्रह कीजिए :–

निम्नलिखित पदों का समास – विग्रह कीजिए :–

विग्रह	**समास**	**समास**	**विग्रह**
मन से गढ़ंत		बाढ़ – पीड़ित	

जेब के लिए खर्च

धर्म से भ्रश्ट

कर्त्तव्य में निश्ठा

दे ा के लिए प्रेम

लाखों का पति

आराम के लिए कुर्सी

सबको प्रिय

परीक्षा के लिए केंद्र

पाप से मुक्त

युद्ध – अभ्यास

भुखमरा

जन्मरोगी

भारतरत्न

राजकुमारी

आँखों – देखी

मृत्यु – दंड

नगरवास

पैदलपथ

* * * *

पाठ – 5

वाक्य – भाुद्धि

क्रमाँक	अ ुद्ध वाक्य	भाुद्ध वाक्य	अ ुद्ध वाक्य का कारण
1	महात्मा लोग पधार रहे है।	महात्मा पधार रहे है।	'लोग' (जातिवाचक संज्ञा) के अनाव यक प्रयोग के कारण।
2	मैं मेरे घर जा रहा हूँ।	मैं अपने घर जा रहा हुँ।	'मेरे' (सर्वनाम) के अ ुद्ध प्रयोग के कारण।
3	मैं उसे अनेकों बार समझा चुका हुँ।	मैं उसे अनेक बार समझा चुका हुँ।	'अनेकों'(वचन) के अ ुद्ध प्रयोग के कारण।
4	उसके माता जी चंडीगढ़ में रहते हैं।	उसकी माता जी चंडीगढ़ में रहती हैं।	'उसके' तथा 'रहते' अ ुद्ध लिंग प्रयोग के कारण।
5	बंदर छत में बैठा है।	बंदर छत पर बैठा है।	'मैं' अ ुद्ध परसर्ग चिह्न के प्रयोग के कारण।
6	जय ांकर प्रसाद बड़े अच्छे कहानीकार थे।	जय ांकर प्रसाद बहुत अच्छे कहानीकार थे।	'बड़े' (वि ोशण) के अ ुद्य प्रयोग के कारण।
7	उसने यह काम करा।	उसने यह काम किया।	'करा' (क्रिया) के अ ुद्ध प्रयोग के कारण।
8	बच्चे को काटकर सेब खिलाओ।	सेब काटकर बच्चे को खिलाओ।	'पदक्रम' के अ ुद्ध प्रयोग के कारण।
9	पुलिस ने चोरों का पीछा किया गया।	पुलिस के द्वारा चोरों का पीछा किया गया।	'वाच्य' प्रयोग की अ ुदधि के कारण।
10	मैं सप्रमाण सहित कहता हूँ।	मैं सप्रमाण कहता हूँ। या मैं प्रमाण सहित कहता हूँ	पुनरूक्ति की अ ुद्धि के कारण।

उपर्युक्त उदाहरणों को देखने से पता चलता है कि कई बार संज्ञा, सर्वनाम, वचन, लिंग, परसर्ग, चिह्न, वि ोशण, यिा, पदक्रम, वाच्य पुनरूक्ति आदि की अ ुद्धियाँ के कारण वाक्य अ ुद्य हो जाते है। इन अ ुद्धियों को विद्यार्थी समझ और अभ्यास के द्वारा दूर कर सकता है। इस सम्बन्ध में निम्नलिखित कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं :

1. संज्ञा सम्बन्धी अ ुद्धियाँ

क्रमाँक	अ ुद्ध वाक्य	भाुद्ध वाक्य
1	वह रविवार के दिन तुम्हारे घर आएगा।	वह रविवार को तुम्हारे घर आएगा।
2	आपकी नारी का क्या नाम हैं ?	आपकी पत्नी का क्या नाम हैं ?
3	मैं अपने दादे के घर जाऊँगी।	मैं अपने दादा के घर जाऊँगी।

4	माली जल से पौधों को सींचता है।	माली पौधों को सींचता है।
5	उसने सभा में क्रोध प्रकट किया।	उसने सभा में रोश प्रकट किया।
6	लड़का ने पत्र लिखा।	लड़के ने पत्र लिखा।

2. सर्वनाम सम्बन्धी अ ाुद्धियाँ

क्रमाँक	अ ाुद्ध वाक्य	भ्ाुद्ध वाक्य
1.	देखो, बाहर दरवाज़े पर क्या आया ?	देखो, बाहर दरवाज़े पर कौन आया है ?
2.	दूध में कौन गिर गया है ?	दूध में क्या गिर गया है ?

वि ोश : 'कौन' सर्वनाम का प्रयोग मानव के लिए तथा 'क्या' सर्वनाम का प्रयोग जड़ वस्तुओं या मानवेतर प्राणियों के लिए होता है।

3.	मैं इस सम्बन्ध में मेरी राय प्रकट कर चुका हूँ।	मैं इस सम्बन्ध में अपनी राय प्रकट कर चुका हूँ।
4.	मेरे को स्कूल जाना है।	मूझे स्कूल जाना है।
5.	तुम तो आ गए, किन्तु तुम्हारा सामान नहीं आया।	आप तो आ गए हो, किन्तु तुम्हारा सामान नहीं आया।

3. वचन सम्बन्धी अ ाुद्धियाँ

क्रमाँक	अ ाुद्ध वाक्य	भ्ाुद्ध वाक्य
1.	दो व्यक्ति के लिए खाना बना है।	दो व्यक्तियों के लिए खाना बना है।
2.	सिपाही ने युद्ध में प्राण की बाज़ी लगा दी।	सिपाही ने युद्ध में प्राणों की बाज़ी लगा दी।
3.	उसने हस्ताक्षर कर दिया है।	उसने हस्ताक्षर कर दिये हैं।
4.	हम आपकी कृपाओं को कभी भूल नहीं सकते ।	हम आपकी कृपा को कभी भूल नहीं सकते।

4. लिंग सम्बन्धी अ ाुद्धियाँ

क्रमाँक	अ ाुद्ध वाक्य	भ्ाुद्ध वाक्य
1.	कवि महादेवी वर्मा को कौर नहीं जानता ?	कवयित्री महादेवी वर्मा को कौन नहीं जानता ?

2. पीतल सस्ती हो गयी है। पीतल सस्ता हो गया है।

वि ोश : पीतल, लोहा, सोना ताँबा–ये धातुएँ पुल्लिंग में प्रयुक्त होती है। अपवाद : चाँदी

3. पानी गिर गया है। पानी गिर गया है।

वि ोश : पानी, तेल, घी, भारबत दूध–ये द्रव पदार्थ पुल्लिंग में प्रयुक्त होते है। अपवाद : लस्सी,चाय,कॉफी

4. मेधावी मेरी अनुज है। मेधावी मेरी अनुजा है।

5. वह अध्यापिका विद्वान है। वह अध्यापिका विदुशी है।

5. परसर्ग चिह्न (कारक चिह्न) सम्बन्धी अ ाुद्धियाँ

क्रमाँक	अ ाुद्ध वाक्य	भाुद्ध वाक्य
1.	मुके ा ने पुस्तक पढ़ना है।	मुके ा पुस्तक पढ़ता है।
2.	उसने भूख लगी है।	उसको भूख लगी है।
3.	अरविन्द स्कूल को जा रहा है।	अरविन्द स्कूल जा रहा है।

वि ोश : गतिवाचक क्रियाओं में स्थानसूचक कर्म के साथ 'को' परसर्ग नहीं लगता।

4.	पिंकी से हमें उसकी माता जी के स्वर्गवास होने की खबर मिली।	पिंकी के द्वारा हमें उसकी माता जी के स्वर्गवास की खबर मिली।

वि ोश : करण कारक में 'से' चिह्न का प्रयोग होता है किन्तु प्रायः मध्यस्थता सूचक भाब्दों के साथ 'द्वारा' 'के द्वारा', 'के ज़रिए' चिह्नो का प्रयोग होता है।

5.	हम पढ़ने को स्कूल जाते है।	हम पढ़ने के लिए स्कूल जाते है।
6.	मैं मेरी दीदी के पास जा रहा हूँ।	मैं अपनी दीदी के पास जा रहा हूँ
7.	पेड़ों में मत चढ़ो।	पेड़ों पर मत चढ़ों।

6. वि ोशण सम्बन्धी अ ाुद्धियाँ

क्रमाँक	अ ाुद्ध वाक्य	भाुद्ध वाक्य
1.	वह मधुरतम गाती है।	वह मधुर गाती है।

वि ोश : उपर्युक्त उदाहरण में वि ोशण की मूल अवस्था (मधूर) का ही प्रयोग होगा न कि उत्तम अवस्था (मधुरतम) का। यहाँ किसी कि किसी से तुलना नहीं की जा रही है।

2.	उसने झूठ बात कही।	उसने झूठी बात कही।

वि ोश : उपर्युक्त उदाहरण में 'झूठी' (वि ोशण) का ही प्रयोग होगा न कि 'झूठ' (संज्ञा) का। 'बात' स्त्रीलिंग भाब्द होने के कारण 'झूठी' वि ोशण का स्त्रीलिंग में प्रयोग हुआ है।

3.	युद्ध में खूंखार अस्त्रों – भास्त्रों का प्रयोग किया गया।	युद्ध में विना ाकारी अस्त्रों – भास्त्रों का प्रयोग किया गया।
4.	मुझे भारी प्यास लगी हुई है।	मुझे बहुत प्यास लगी हुई है।
5.	प्रत्येक बालिका को चार – चार लड्डू दे दो।	प्रत्येक बालिका को चार लड्डू दे दो।

7. क्रिया सम्बन्धी अ ाुद्धियाँ

क्रमाँक	अ ाुद्ध वाक्य	भ्ाुद्ध वाक्य
1.	मेरी बहन ने मुझे कहानी सुनाया।	मेरी बहन ने मुझे कहानी सुनायी।
2.	हमें हरी सब्ज़ियाँ खाना चाहिए।	हमें हरी सब्ज़ियाँ खानी चाहिएं।
3.	गुड़िया विलाम करके रोने लगी।	गुड़िया विलाप करने लगी।
4.	सभापति ने अच्छा भाशण किया।	सभापति ने अच्छा भाशण दिया।
5.	हम कल तुम्हारे घर आऊँगा।	हम कल तुम्हारे घर आएँगें।
6.	मैं मेरी दीदी के पास जा रहा हूँ।	मैं अपनी दीदी के पास जा रहा हूँ
7.	पेड़ों में मत चढ़ो।	पेड़ों पर मत चढ़ों।

8. पदक्रम सम्बन्धी अ ाुद्धियाँ

क्रमाँक	अ ाुद्ध वाक्य	भ्ाुद्ध वाक्य
1.	कॉपियाँ ये किसकी हैं ?	ये कॉपियाँ किसकी हैं ?
2.	चार मालाएँ फूलों की ले आओ।	फूलों की चार मालाएँ ले आओ।
3.	अध्यापक ने पाठ छात्रों कों पढ़ाया।	अध्यापक ने छात्रों को पाठ पढ़ाया।

वि ोश : द्विकर्मक क्रिया होने प गौण कर्म पहले और मुख्य कर्म बाद में आता है। गौण कर्म के साथ परसर्ग का प्रयोग होता है जबकि मुख्य कर्म के साथ परसर्ग का प्रयोग नहीं होता। यहाँ 'छात्र' गौण तथा 'पाठ' मुख्य कर्म है।

4.	वह स्कूल गया खाना खाकर।	वह खाना खाकर स्कूल गाया।

वि ोश : पूर्वकालिक क्रिया मुख्य क्रिया से पूर्व आती है। उपर्युक्त वाक्य में 'खाकर' क्रिया पूर्वकालिक क्रिया है।

5.	मैं नहीं खेलने जाऊँगा।	मैं खेलने नहीं जाऊँगा।

वि ोश : निशेधात्मक वाक्यों में 'न' / नहीं ' का प्रयोग प्रायः क्रिया से पूर्व किया जाता है। उपर्युक्त वाक्य में 'नहीं ' का प्रयोग जाऊँगा (क्रिया) से पूर्व हुआ है।

6.	रजनी ा गुप्ता (डॉ.) बहुत ही अनुभवी है।	डॉ. रजनी ा गुप्ता बहुत ही अनुभवी है।

वि ोश : पदवी या व्यवसायसूचक भाब्द नाम से पहले आते है।

9. वाचय सम्बन्धी अ ाुद्धियाँ

क्रमाँक	अ ाुद्ध वाक्य	भाुद्ध वाक्य
1.	पुलिस द्वारा चोर को पकड़ा।	पुलिस द्वारा चोर पकड़ा गया।
2.	ये पंक्तियाँ 'पंत' जी की कविता से ली है।	ये पंक्तियाँ 'पंत' जी की कविता से ली गई है।
3.	अध्यापक ने हमसे लेख लिखाया।	अध्यापक ने हमसे लेख लिखवाया।
4.	मेरे द्वारा पत्र लिखा।	मेरे द्वारा पत्र लिखा गया।

10. पुनरूक्ति (आवृत्ति) सम्बन्धी अ ाुद्धियाँ

क्रमाँक	अ ाुद्ध वाक्य	भाुद्ध वाक्य
1.	मैं सप्रेम सहित नमस्कार करता हूँ।	मैं प्रेम सहित नमस्कार करता हूँ। या मैं सप्रेम नमस्कार करता हूँ
2.	मनाली के अनेक द ार्नीय स्थल देखने योग्य है।	मनाली में अनेंक स्थल देखने योग्य है। या मनाली में द ार्नीय स्थल है।
3.	कृपया मेरे घर आने की कृपा करें।	मेरे घर आने की कृपा करें। या कृपया मेरे घर आएँ।
4.	यह स्थान केवल मात्र विकलांगों के लिए आरक्षित है।	यह स्थान केवल विकलांगों के लिए आरक्षित है।
5.	वह निरंतर लगातार खेलता रहता है।	वह निरंतर खेलता रहता है। या वह लगातार खेलता रहता है।
6.	यह पठनीय लेख पढ़ने योग्य है।	यह लेख पढ़ने योग्य है। या यह लेख पठनीय है।

11. प्रत्ययों के अनुचित प्रयोग सम्बन्धी अ ाुद्धियाँ

क्रमाँक	अ ाुद्ध वाक्य	भ ाुद्ध वाक्य
1.	पूज्यनीय माता–पिता का आदर करो।	पूज्य माता–पिता का आदर करो।
2.	इस भोजन में बहुत कड़वाहटता है।	इस भोजन में बहुत कड़वाहट है।
3.	ि ामला की सौन्दर्यता सबको प्रभावित करती है।	ि ामला की सुन्दरता सबको प्रभावित करती है। या ि ामला का सौन्दर्य सबको प्रभावित करता है।
4.	मनुश्य में इन्सानियतता होनी चाहिए।	मनुश्य में इन्सानियत होनी चाहिए।

12. अनाव यक भाब्दों के प्रयोग सम्बन्धी अ ाुद्धियाँ

क्रमाँक	अ ाुद्ध वाक्य	भ ाुद्ध वाक्य
1.	वह बुरी तरह से घबरा गया।	वह बुरी तरह घबरा गया।
2.	वह बेफजूल बोल रहा ।	वह फजूल बोल रहा है।
3.	दुश्टों के डर से डरो मत।	दुश्टों से डरो मत।
4.	हमें वहाँ जाने से ज़रूर लाभ प्राप्त होगा।	हमें वहाँ जाने से ज़रूर लाभ होगा।
5.	उसके पिता जी अफसर लगे लगे हुए है।	उसके पिता जी अफसर है।

निम्नलिखित वाक्यों को भ ाुद्ध करके लिखिए :–

क्रमाँक	अ ाुद्ध वाक्य	भ ाुद्ध वाक्य
1.	वह बुधवार के दिन आएगा।	
2.	चारों अपराधियों का नाम बताओ।	
3.	मेरे को दिल्ली जाना है।	
4.	उसका आँसू निकल आया।	
5.	मेले में बच्ची गुम हो गया।	
6.	रानी छत में खेल रही है।	
7.	वह चले गए।	
8.	मैं गर्म गाय का दूध पीना चाहता हूँ।	
9.	मैने उसका गाना और नृत्य देखा।	
10.	बालक को थाली में रखकर खाना खिलाओ।	

11. क्रिकट भारत की प्रिय खेल है।
12. मेरी कमीज़ नया है।
13. मैं मेरे घर जा रहा हूँ
14. वह बेफजूल बोल रहा है।
15. क्या वह छत पर से गिर गया।
16. उसने मेरे आगे हाथ जोड़ा।
17. नेता जी पुनः फिर से चुन लिए गए है।
18. वह विलाप करके रोने लगी।
19. अगले साल वह लुधियाना गया था।
20. वह लौटकर वापिस आ गया।